अनुक्रमणिका:-

प्रथम अध्याय

मिथक की अवधारणा एवं स्वरूप 1-22

1.1 मिथक का अर्थ एवं परिभाषाएँ

1.2 मिथक का उद्भव एवं विकास

1.3 मिथक के संबंध में भारतीय दृष्टिकोण

द्वितीय अध्याय

'उपसंहार' में मिथकीय चेतना 23-53

2.1 मिथक के रूप में महाभारत कथा का महत्व

2.2'उपसंहार'में मिथक का पुनर्सृजन

2.3 कृष्ण कथा का मिथकीय स्वरूप

तृतीय अध्याय

'उपसंहार': आधुनिक भावबोध और प्रासंगिकता 54-85

उपसंहार 86-91

परिशिष्ट 92-92

संदर्भ ग्रंथ 93-95